(The Tree Question)

हम इसे किसे दे? मेरे हाथ के इस भेट को. अकेले में अपने आप को दुसरे लोग या दुसरे वास्तु के सामने अभिव्यक्त करने की इच्छा और भीड़ में अपने आप को दुसरे के सामने अभिव्यक्त करने की इच्छा. मैं किसको व्यक्त करूँ? क्या मेरी बात उस इंसान से हैं, क्या उन्हें कुछ देने की इच्छा मेरे मन में हैं, क्या मेरी इच्छा इस इंसान के साथ रहने की सिर्फ एक धोका हैं? क्या मैं वाकई में अकेला हूँ? क्या वो जो भी मौजूद हैं वह सिर्फ 'मैं' हैं?

ऋग्वेद, आदमी की भगवान् को देने की इच्छा के बारे में बात करता हैं. लेकिन फिर पूंछता हैं,'मैं कुर्बानी के साथ किसका हाय मानु'? काव्य छंद में इस सवाल को आत्मा की गूंज के रूप में दोहराया गया है. इस सवाल का उत्तर यह कह कर दिया जाता हैं की स्वर्ण भ्रूण ही सबका भगवान् का रूप हैं. सभी प्राणी इस भगवान् का कहा मानते हैं, 'जो अपने शक्ति से सारे सांस लेने वाले जीवो का और सारे पलके खोलने वाले आखों का एक मात्र राजा हैं.....जिसके द्वारा ही स्वर्ग और पृथ्वी अपनी जगह में आयोजित हैं, जो सूर्य को एक दृढ़ समर्थन देता हैं....'. यह वही हैं जिसकी हम यया कटे हैं और भेट भी चढाते हैं. यह वही है जिससे हम अकेले में बाते करते हैं और जिसका धन्यवाद भी करते हैं.

यह उस उम्र पुराने सवाल का जवाब देता हैं, 'अगर एक पेड़ जंगल में गिरता हैं, और वहां कोई नहीं हैं जो उसको सुन सके, क्या तो भी वह आवाज़ करता है?' इस सवाल ने कईयों को आकर्षित किया हैं. इस सवाल में कई सवालों में से एक सवाल हैं, 'अगर मैं नहीं सुनता हूँ, तो भी क्या यह होता हैं?' यह शायद हमारे प्रश्न का एक बहुत ही दिलचस्प हिस्सा हैं. अगर मैं किसी चीज़ के बारे में नहीं जानता हूँ, और वह कुछ चीज़ (इस मामले में ध्वनी) मेरे मन की धारणा में मौजूद नहीं हैं, तो क्या यह संभव हैं? कुछ जवाब की खुद को सही न लगे, इसलिए उस व्यक्ति के लिए वह मौजूद नहीं हैं. लेकिन यह इस सवाल को नकारना होगा. प्रश्न अनिवार्य रूप से पूछता हैं, अगर यह एक जीव को नहीं ज्ञात हैं तो क्या यह वाकई में सही हैं की नहीं? इस प्रश्न का एक हिस्सा यह पूंछता हैं, 'क्या मैं भगवान् हूँ'? दूसरे शब्दों में, "क्या सच्चाई निर्धारित होता हैं की मैं क्या सुन रहा हूँ, देख रहा हूँ या फिर सोंच रहा हूँ?" अगर मैं पेड़ को गिरते हुए नहीं सुनता हूँ तो वह सही कैसे हो सकता हैं? विस्तार में, क्या होगा अगर किसी ने भी पेड़ को गिरते हुए नहीं सुना? अब येही सवाल को बहुवचन रूप से पूंछने पर, 'अगर किसी व्यक्ति ने उस पेड़ को गिरते हुए नहीं सुना तो क्या कोई और हैं जिसने उस ध्वनी को सुनी हैं? क्या अनुभव और वास्तविकता आदमी निर्णय करता हैं या आदमी ने उसकी सृष्टि की हैं, या अनुभव और वास्तविकता किसी और की सृष्टि के रूप में आदमी प्राप्त कर उसका आनंद लेता हैं? क्या हम भगवान् हैं या फिर उनकी सृष्टि? क्या यह दुनिया हमारे सोंचने और सपने पर निर्धारित हैं या क्या यह दुनिया भगवान् की सृष्टि हैं जिसे आदमी सही या

गलत माने में अनुभव करता हैं. सीधे शब्दों में, पेड़ के सवाल का उत्तर इस बात पर निर्धारित हैं की भगवान् कौन हैं? यदि आप वह महान 'मैं हूँ' हैं, तब वह पेड़ तब तक ध्वनी नहीं करता जब तक आप उसे नहीं सुनते. और यदि आप भगवान् हैं, तो जब आप अकेले हैं ..... तो आप अकेले ही हैं. किसी और से बातचीत करने की कोशिश का कोई फायदा नहीं हैं. किसी का भय, देने की और बातचीत जर्ने की इच्छा केवल एक इच्छादारी सोंच हैं.

लेकिन अगर कोई और हैं, सारी प्राणी का भगवान् तो वह वृक्ष सही हैं और वह जो ध्वनी करता हैं वह भी सही हैं और भगवान् उसे सुनता हैं. और यह भगवान् उस महान 'मैं हूँ' के रूप में प्रकट हुआ है और सारी सृष्टि का मूल, इस संसार का सृष्टिकर्ता. सवाल के एक मामूली मोड़ से इस सवाल के मुद्दे को स्पष्ट करता हैं. 'यदि भगवान् आवाज़ करता हैं और आदमी उस आवाज़ को नहीं सुन पाटा, तो क्या तब भी भगवान् मौजूद हैं'? यह सवाल भी उस वृक्ष के सवाल के भाति हैं. यदि वह 'मैं हूँ' तुम हो, तो सारी बातें तुम्हारे मन और उपस्थिति में असल हो जाने का इंतज़ार करेंगे. सारी सृष्टि तुम्हारे द्वारा जाने जाने के लिए प्रतीक्षा करेगी. तुम्हारे बहार उनका कोई अस्तित्व नहीं हैं. अगर वहां वह महान 'मैं हूँ' उपस्थित है, तो सब का अस्तित्व उनमे से ही आती हैं और सब कुछ उन्ही के द्वारा कथित हैं. परमेश्वर अपने आप को प्रकट करता हैं, सब के मूल के रूप में, सृष्टिकर्ता के रूप में, और ब्रहमां के निर्वाहक के रूप में. जब एक आदमी अपने अंदर से चीखता हैं, हालांकि हम अपने आप को खोया और अकेला महसूस करते हैं लेकिन फिर भी वह चीख असली होती हैं. और यह चीख भगवान् सुन लेते हैं.

व्याट रोबिनसन द्वारा लिखित

१) गुडआल डोमिनिक हिन्दू ग्रंथों की यूनिवर्सिटी के कैलिफोर्निया प्रेस, बर्कली, सी ए,१९९६, ऋग्वेद १०, १२१, पृष्ठ १५.